शोध मंथन, Impact Factor 5.463 (SJIF), UGC No. 40908 ISSN: (P): 0976-5255, (e) : 2454-339X,
Vol. 9, Issue 4, pp (171-175), Month: Dec. 2018

दरबारी चित्रकार निहालचन्द का किशनगढ़ की चित्रकला में योगदान

डॉ० रीता सिंह
PDFWM (U.G.C)
ललित कला विभाग, मेरठ कॉलिज, मेरठ, उत्तर प्रदेश, भारत ।

सारांश

*भारतीय संस्कृति और भक्तिपरक अध्यात्म की **रसधारा** किशनगढ़ के चित्रों में प्रवाहित हो रही है। साथ ही काव्य, कला एवं संगीत की त्रिवेणी इन चित्रों का प्रमुख आधार है। किशनगढ़ की चित्रकला, इतिहास, धर्म, शासन सभी को अपनी **अलौकिक सौन्दर्य** दृष्टि से **निहारती** हुई उच्च स्तर तक पहुँची। इस शैली में कई पीढ़ियों से राजा, महाराजा, कवि और कलाकार एवं कला प्रेमी हुए हैं। किशनगढ़ शैली की चित्रकला को ऊँचाई तक पहुँचाने का कार्य महाराजा नागरीदास (सांवत सिंह) जी की कलम और निहालचन्द जी की तूलिका ने किया है।*

निहालचन्द ने चित्रों में भक्ति–भाव को सहज रूप में धारण करने का माध्यम नेत्रों को माना है। जिस कारण किशनगढ़ के चित्रों में आँखे आध्यात्मिक भाव को प्रगट करती है। निहालचन्द के चित्रों में यही सौन्दर्य समाया है क्योंकि निहालचन्द ने सर्वप्रथम नागरीदास को गहराई से देखा। निहालचन्द के चित्रों में रंग संयोजन सुन्दर और कोमल आभा लिए हुए है। राधा–कृष्ण के अलौकिक भावों को व्यक्त करने के लिए हल्के रंगो को भावपूर्ण ढंग से अंकित किया गया है।

प्रस्तावना

राजस्थानी शैलियों में किशनगढ़ शैली, कला और साहित्य की विकसित परम्परा की अद्भुत कलात्मक शैली रही है क्योंकि कला और साहित्य पर भौगोलिक और स्थानीय वातावरण का अधिक प्रभाव पड़ता है। अजमेर के पास स्थित किशनगढ़ प्राकृतिक सौन्दर्य के लिए सदैव प्रसिद्ध रहा है। यहाँ की छोटी–बड़ी नदियाँ, ऊँचे–नीचे पहाड़, हरे–भरे मैदान, तालाबों तथा घनघोर घटाओं व राधा–कृष्ण का अद्भुत सौन्दर्य ही कलाकारों की **तूलिका** का आधार बना है। राजस्थान की विश्व प्रसिद्ध किशनगढ़ शैली के चित्रों में **आध्यात्मिक भक्ति,** काव्य, कला, संगीत का संयोजन और रंग–रेखाओं का लालित्य मुखरित हुआ है। राजस्थान की ललित संस्कृति प्रतिभा सम्पन्न और **गरिमामय** है जो स्वयं सांस्कृतिक एकता का सूचक है और युगों से भारतीय परम्परा से जुड़ी रही है।[1]

किशनगढ़ शैली के चित्रों में ताजगी और उल्लास समाया हुआ है। इनमें लोक की विनोद भरी सुखद स्मृति भी दिखाई देती है। तभी तो ये चित्र जीवन में आनन्द का संचार करते हैं। क्योंकि वल्लभ सम्प्रदाय का प्रभाव किशनगढ़ शैली के लिए विशेष स्थान रखता है और

वल्लभाचार्य स्वयं चित्रकार थे, उन्होंने कहा भी है कि भक्ति आदि से प्रेम का बीज हृदय में जमता है।

भारतीय संस्कृति और भक्तिपरक अध्यात्म की **रसधारा** किशनगढ़ के चित्रों में प्रवाहित हो रही है। साथ ही काव्य, कला एवं संगीत की त्रिवेणी इन चित्रों का प्रमुख आधार है। किशनगढ़ की चित्रकला, इतिहास, धर्म, शासन सभी को अपनी **अलौकिक सौन्दर्य** दृष्टि से **निहारती** हुई उच्च स्तर तक पहुँची। इस शैली में कई पीढ़ियों से राजा, महाराजा, कवि और कलाकार एवं कला प्रेमी हुए हैं। किशनगढ़ शैली की चित्रकला को ऊँचाई तक पहुँचाने का कार्य महाराजा नागरीदास (सांवत सिंह) जी की कलम और निहालचन्द जी की तूलिका ने किया है। निहालचन्द महाराजा नागरीदास के समकालीन थे। निहालचन्द के पितामह सूरध्वज मूलराज दिल्ली से आकर राजा मानसिंह के दिवान हुए।[2] अतः यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि जब निहालचन्द के पितामह दिल्ली से आये थे तो निहालचन्द ग्रामीण परिवेश के कलाकार कैसे माने जा सकते हैं, कहीं भी ऐसा प्रमाण नहीं मिलता है कि इनकी जन्म स्थली दिल्ली थी या किशनगढ़। इतना अवश्य स्पष्ट है कि वे नागरीदास जी के समकालीन दरबारी चित्रकार थे।[3] यहाँ उन्हें वह उपजाऊ भूमि मिली जिसमें ललित संस्कारों का सौन्दर्य समाया हुआ था। किशनगढ़ के **संस्थापक** किशन सिंह जी ने सोढोलाव गाँव का रूप बदला, नाम बदला परन्तु प्राकृतिक, धार्मिक और ग्रामीण परिवेश का लालित्यपूर्ण लोक हृदय नहीं बदला जो किशनगढ़ के चित्रों में सजीव हुआ है

निहालचन्द **दरबारी कलाकार** अवश्य थे, परन्तु उन्होनें चित्र ग्राम्य जीवन की लोक भावना से ओतप्रोत होकर बनाये। जिस प्रकार महाराजा नागरीदास महाराजा तो थे, किन्तु लोक जीवन की भावनाएँ उनकी हर काव्य पंक्ति में चित्रित है और वह असीम आनंद का विस्तार देती है। तत्कालीन धार्मिक भावना ने काव्य को और काव्य ने चित्रकला को इस प्रकार प्रभावित किया कि काव्य और चित्रकला का यह पारस्परिक सम्बन्ध विशेष रूप से चित्रों में स्पष्ट हुआ, क्योंकि दोनों ही मनुष्य की **सौन्दर्यानुभूति** से प्रेरित होते है।[4]

किशनगढ़ शैली का **समृद्धकाल** सावंतसिंह और समकालीन कलाकार निहालचन्द को ही जाता है[5]। कृष्ण भक्ति में नागरीदास जी का व्यक्तित्व पूर्णरूप से मुखरित हुआ है। इनकी प्रेरणा से किशनगढ़ शैली के चित्रों का साहित्यिक आधार ठोस एवं सशक्त बना[6]। अपनी रसमयी मनोहारी रंग योजना, आकर्षक एवं गतिमान रेखा–सौन्दर्य तथा **लावण्यमय** संयोजन वैशिष्ट्य के कारण किशनगढ़ शैली के चित्र ने केवल भारत में वरन् विश्वभर में प्रसिद्ध हैं। काव्य और कला का जो संगम हम किशनगढ़ शैली में पाते हैं वह अद्वितीय है।[7] उमड़ते–घुमड़ते बादल, फूलों से आच्छादित तालाब, दूधिया चाँदनी रात, रिमझिम वर्षा के अवशेष (जो भवनों के मध्य दिखाये गये है), विस्तृत सरोवर में लहरों से अठखेलियाँ करती नौकाएँ, पक्षियों और वृक्षों के लालित्यपूर्ण लतापत्रों की सघनता जिनमें धार्मिक भावनाओं के प्रतिरूप कृश्ण–राधिका, गोपियों के संग विचरण करते हुए दिखाई देते हैं। प्रातः और सिन्दूरी संध्या, हर मौसम के विविध **भावपूर्ण** रंग प्रकृति का वह नैसर्गिक वातावरण निहालचन्द के बाल मन में उपस्थित होकर काव्यमय पृष्ठभूमि

के साक्षी चित्र भाव को साकार करते हैं। निहालचन्द को ऐसा अनुभव था जिसे उन्होंने चित्र रूप में साकार भी किया है।

निहालचन्द का **"दीपावली"** चित्र जिसमें कृष्ण और राधिका अत्यन्त सुन्दर सिंहासन पर विराजमान है मध्य में एक गोपी नृत्य कर रही है। दाये–बाये चार–चार गोपियाँ खड़ी है, जिनमें कुछ फुलझड़ी छुटा रही है। पानी में दो बत्तख तैर रही है। सारा चित्र मानो दीपावली की रोशनी में जगमगा रहा है। सम्पूर्ण संयोजन भावपूर्ण है जो एक कलाकार की विशाल कल्पना का काव्य रूप ही फलक पर उतर आया है। काले रंग की पृष्ठभूमि में सुनहरे रंग का प्रयोग किया गया है।[8]

किशनगढ़ की चित्र शैली के इतिहास में महाराजा नागरीदास और चित्रकार निहालचन्द का वही स्थान है जो कांगड़ा की शैली में महाराजा संसार चन्द और उनके कलाकारों का स्थान है।[9] नागरीदास और निहालचन्द के चित्र स्वयं में एक शैली बन गये थे।[10]

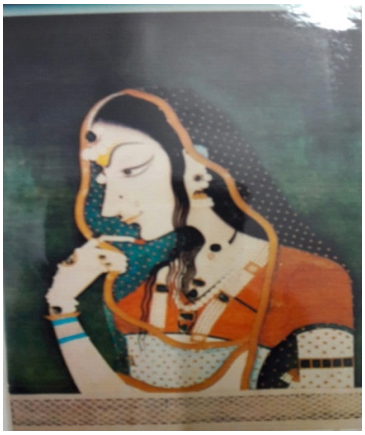

बणीठणी" के विषय में कहा जाता है कि राज दरबार में इनका एक संगीतज्ञ, कवयित्री के रूप में सम्मान था क्योंकि वे स्वयं इनमें प्रवीण थी, जिसका सर्वत्र प्रभाव आज भी स्पष्ट है।

नागरीदास जी ने प्रियसी के रूप में इनकी आराधना की इनके प्रति कविवर का आत्म निवेदन एक स्वस्थ काव्य धारा के रूप में **प्रस्फुटित** हुआ जिसने चित्रकारों को विषय वस्तु की काव्यमय पृष्ठभूमि तथा कल्पना एवं सौन्दर्य का विशाल[11] फलक दिया। जिस पर चित्रकार निहालचन्द ने कवि नागरीदास और बणीठणी का एक भावपूर्ण चित्र बनाया जिसमें नागरीदास जी बैठे हैं और बणीठणी प्रेरणा भाव से सामने आती हुयी दिखायी गयी है। इस चित्र को कलाकार ने बड़ी गहनता से बनाया है। यहाँ कलाकार की विवशता कुछ कहने की, कुछ खोजने की है। लेकिन यह खोज किसी बने बनाये संसार की खोज नहीं है। रचनाकार स्वयं एक नये संसार को बनाता और उसे समृद्ध करता है।[12]

निहालचन्द ने चित्रों में भक्ति–भाव को सहज रूप में धारण करने का माध्यम नेत्रों को माना है। जिस कारण किशनगढ़ के चित्रों में आँखे आध्यात्मिक भाव को प्रगट करती है। निहालचन्द के चित्रों में यही सौन्दर्य समाया है क्योंकि निहालचन्द ने सर्वप्रथम नागरीदास को गहराई से देखा। निहालचन्द के चित्रों में रंग संयोजन सुन्दर और कोमल आभा लिए हुए है। राधा–कृष्ण के अलौकिक भावों को व्यक्त करने के लिए हल्के रंगो को भावपूर्ण ढंग से अंकित किया गया है। किशनगढ़ के चित्र जो खास तौर पर नागरीदास के समय में निहालचन्द जी द्वारा रचे गये, वे अति भावपूर्ण हैं। निहालचन्द को जन्म से ही धार्मिक और साहित्यिक आधार मिला साथ ही नागरीदास जी जैसे समकालीन महाराजा मिले। निहालचन्द ने किशनगढ़ के प्राकृतिक **ग्रामीण परिवेश** की परम्परा को गहराई से **आत्मसात** कर दरबारी चित्रकार होते हुए भी अपने चित्रों को लोक की प्रकृति से ही **आच्छादित** रखा। निहालचन्द और नागरीदास सहजबोध के पूरक थे। दोनों चित्रकार थे– एक शब्दों का, दूसरा रंग और रेखाओं का। प्रत्येक उत्कृष्ट कलाकार अपनी कला में कुछ नये मौलिक तत्व प्रदान करता है।[13] किशनगढ़ शैली के चित्रों में एक अनूठा जादू भरने तथा "बणीठणी" के सौन्दर्य को आधार बनाकर राधा–कृष्ण के पुनीत माधुर्य भाव को जीवन्त रूप प्रदान करने में मोरध्वज निहालचन्द का नाम स्मरणीय है। यह इनकी ही अद्वितीय चित्रांकन प्रतिभा का परिणाम था कि किशनगढ़ शैली में जादुई प्रभाव की सृष्टि सम्भव हो सकी[14] निहालचन्द की कृतियाँ मौलिक अलंकारों से अंलकृत हो विश्व फलक पर चमकती है। इसी मौलिकता को निहाचन्द की आत्मा ने संजोया है, परखा है और कला का आधार बनाया है।

सन्दर्भ

1. रवीन्द्रनाथ मुखर्जी – *सामाजिक नियन्त्रण व सामाजिक परिवर्तन*, पृष्ठ **105**
2. आकृति–अक्टूबर, 1997, पृष्ठ–**28** – मानसिंह जी सांमत सिंह जी के पितामह थे।
3. गोविन्द सिंह राठौड – *मारवाड की सांस्कृतिक धरोहर* पृष्ठ **193**
4. डॉ0 रामनाथ – *मध्यकालीन भारतीय कलाएँ एवं उनका विकास*, पृष्ठ **9**
5. डॉ0 गोपीनाथ शर्मा – *राजस्थान का इतिहास*, पृष्ठ **617**
6. प्रेमचन्द गोस्वामी – *राजस्थान की लघु चित्र शैलियाँ*, पृष्ठ **31**

7. प्रेमचन्द गोस्वामी – *राजस्थान की लघु चित्रशैलियाँ*, पृष्ठ **34**
8. एरिक डिकिंसन एवं कार्ल खण्डालावाल – *किशनगढ़ पेंटिग,*
9. ई0 कुमारिल स्वामी – *भारतीय कला और कलाकार* पृष्ठ–**40**
10. व्यास एवं शर्मा– *राजस्थान का इतिहास,* पृष्ठ **273**
11. प्रेमचन्द गोस्वामी – *राजस्थानी लघु चित्र शैलियाँ*, पृष्ठ, **32**
12. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी – *रचना के सरोकार,* पृष्ठ **17**
13. श्री प्रकाश चन्द्र गुप्ता – *सम्मेलन पत्रिका, कला और मौलिकता,* पृष्ठ–**47**
14. प्रेमचन्द गोस्वामी – *राजस्थान की लघु चित्र शैलियाँ,* पृष्ठ **32**